किताबवाले
KITABWALE

हिन्दी-अंग्रेजी की साहित्यिक कृतियाँ (उपन्यास-कथा) एवं भारतीय संस्कृति
तथा विदेशी-मूल की हिन्दी में अनूदित पुस्तकों के प्रकाशक

7/31, Ansari Road, Daryaganj, New Delhi-110 002

History इतिहास Poems जनजातीय अध्ययन
साहित्य
कहानियाँ योग धर्म उपन्यास
Stories कविताएँ Poems इतिहास Religion
Novel History साहित्य इतिहास
कहानियाँ योग संस्कृति Yoga उपन्यास
Literature कविताएँ इतिहास कहानियाँ योग
कविताएँ
जनजातीय अध्ययन धर्म साहित्य उपन्यास
Yoga Religion संस्कृति इतिहास Poems Tribal Studies जनजातीय अध्ययन
साहित्य योग संस्कृति Novel
Culture
कविताएँ धर्म इतिहास Stories
Culture साहित्य कविताएँ
कहानियाँ योग Stories धर्म History

Ph. : 011-23263032
www.kitabwale.com
Email : kitabwale@gmail.com

अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना के रचनात्मक सहयोग से

अमृत वाङ्मय

संपादक : बाल मुकुन्द पाण्डेय
राकेश मंजुल

स्वत्व जागरण श्रृंखला

संपादक : नरेन्द्र शुक्ल

भारत की मौलिक एकता		वासुदेवशरण अग्रवाल
978-93-95472-12-8	2023	900.00
राष्ट्रीय चैतन्य के प्रकाश में भारत का स्वाधीनता संघर्ष (1858-1947)		सतीश चन्द्र मित्तल
978-93-90702-37-4	2023	2400.00
सुराज गीतावली : प्रतिबन्धित सुराजी गीत संचयन		नरेन्द्र शुक्ल
978-93-90702-63-3	2023	2700.00
चौरी-चौरा : राष्ट्रीय आयाम की स्थानीय घटना		हिमांशु चतुर्वेदी
978-93-90702-96-1	2023	1500.00
बलिया में क्रान्ति और दमन : अगस्त 1942 में स्वाधीन बलिया और नौकरशाही		देवनाथ उपाध्याय
978-93-95472-13-5	2023	1100.00
स्वाधीनता आंदोलन की बाग़ी कलमें		नरेन्द्र शुक्ल
978-93-90702-39-8	2023	700.00

भारत बोध श्रृंखला

संपादक : रत्नेश कुमार त्रिपाठी

सरस्वती : नदी घाटी सभ्यता एवं संस्कृति		रत्नेश कुमार त्रिपाठी
978-93-90702-95-4	2023	1500.00
सार्थवाह		डॉ. मोती चन्द्र
978-93-95472-15-9	2023	2000.00
भारतवर्ष का अंधकार युगीन इतिहास		काशी प्रसाद जायसवाल
978-93-95472-16-6	2023	1600.00
सम्पत्ति शास्त्र		महावीर प्रसाद द्विवेदी
978-93-95472-14-2	2023	2000.00
कम्बुज देश : राजनैतिक और सांस्कृतिक इतिहास		महेश कुमार शरण
978-93-90702-69-5	2023	1500.00
सनातन संस्कृति के आधुनिक प्रणेता : हनुमान प्रसाद पोद्दार		हिमांशु चतुर्वेदी
978-93-90702-55-8	2023	1250.00

* * * * * * * * * *

भारत की मौलिक एकता

लेखक – वासुदेवशरण अग्रवाल

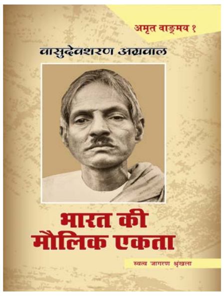

भारत की मौलिक एकता को श्रद्धापूर्वक मानने और उसके अनुसार आचरण करने की जितनी आवश्यकता इस समय है, उतनी पहले कभी नहीं हुई। यदि यह कहा जाए तो भी सच है कि आज के भारतवासी नागरिक के लिए इस एकता की पूर्ण सिद्धि के अतिरिक्त ऊपर उठने का और कोई मार्ग है ही नहीं। यदि भारत की एकता सुरक्षित है, तभी राष्ट्र जीवित रहेगा।

देश की मौलिक एकता का प्रश्न हमारे जीवन-मरण का प्रश्न है। उस पर शान्त मन से विचार करना हमारे लिये अत्यन्त आवश्यक है। इस विषय में हमारे इतिहास और अतीत जीवन की जो सामग्री है, उस पर इस पुस्तक में विचार किया गया है।

978-93-95472-12-8 | 2023 | ₹ 900.00

राष्ट्रीय चैतन्य के प्रकाश में भारत का स्वाधीनता संघर्ष (1858-1947)

लेखक – सतीश चन्द्र मित्तल

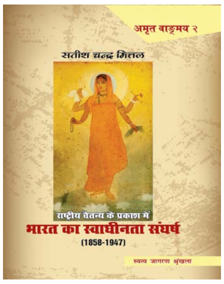

प्रस्तुत ग्रन्थ में 1857 के महासमर के पश्चात् भारत में सीधे ब्रिटिश राजनीतिक उपनिवेश की स्थापना से लेकर, उनके क्रूर दमन, दबाव, दहशत के काल में, भारत के स्वाधीनता संघर्ष के विभिन्न मार्गों का सूक्ष्म तथा विश्लेषणात्मक विवेचन किया गया है। इसमें भारतीय-राष्ट्रवाद की चिन्तनधारा को तीन विशिष्ट मार्गों में बाँटकर चित्रित किया गया है। इसमें पहली है सांस्कृतिक राष्ट्रवादी। क्रान्तिकारी-राष्ट्रवाद इस युग की दूसरी महत्त्वपूर्ण प्रभावी गतिविधि रही। तीसरी प्रकार के स्वाधीनता संघर्षों के प्रयत्नों को 'भ्रामक राष्ट्रवाद' का नाम दे सकते हैं। इस सन्दर्भ में इण्डियन नेशनल काँग्रेस, मुस्लिम-संस्थाओं तथा भारतीय कम्युनिस्टों के योगदान की चर्चा की गई है।

978-93-90702-37-4 | 2023 | ₹ 2400.00

बलिया में क्रान्ति और दमन : अगस्त 1942 में स्वाधीन बलिया और नौकरशाही

लेखक – देवनाथ उपाध्याय

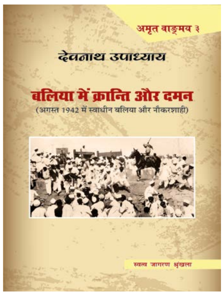

बलिया पर लिखा गया हर वाक्य या तो सरकारी नजर के हिसाब से कहा गया या फिर सीना चौड़ा करते हुए "हम हई बागी बलिया" का ताल ठोंक कर आगे बढ़ जाता है। इससे न तो बलिया के वाकयों की भीतरी परतें खुलती हैं न ही कोई ऐसा विराम मिलता है जो समाज विज्ञान की दुनिया को रोक कर बतिया सके और यह बता सके कि यह क्षेत्र जब अपने क्रान्तिकारी तेवर में था, उसमें बड़ी भूमिका यहाँ के कृषकों की थी। 1942 का आन्दोलन जब राष्ट्रीय बनने की चाहत को पूरा आकार भी नहीं दे पाया था, उससे पहले ही बलिया में हो रही विद्रोही घटनाओं ने राजनीतिक गरमी पैदा कर दी थी। अहिंसा की गाड़ी बम्बई से चलकर बनारस, लखनऊ वाया आजमगढ़ और बलिया तक पहुँचते-पहुँचते अपने मूल अर्थ को ही त्याग चुकी थी। इस पुस्तक के माध्यम से "बलिया में क्रान्ति और दमन" का पूरा वृत्तान्त पता चलता है।

1942 के जरिये बलिया में राष्ट्रीय आन्दोलन, गाँधीवादी सिद्धान्तों का फरमान और कृषकों के ठेठ देहाती सत्याग्रह को समझाना इस पुस्तक का प्रमुख उद्देश्य है।

978-93-95472-13-5 | 2023 | ₹ 1100.00

स्वाधीनता आंदोलन की बाग़ी कलमें

लेखक – नरेन्द्र शुक्ल

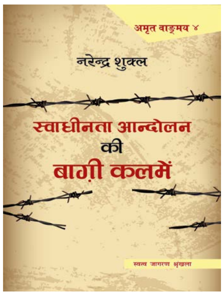

व्यवस्था मानव के इर्द गिर्द सदैव ऐसा ताना बाना बुनती है जिससे वह अपनी परिस्थिति से सन्तुष्ट रहे। किन्तु एक विचारवान प्राणी होने के कारण मानव की असन्तुष्टि उसे व्यवस्था के प्रति विद्रोही बनाती है। जिसकी अभिव्यक्ति वह अपने युग में उपस्थित अभिव्यक्ति के विभिन्न माध्यमों से करता है। ऐसे में यदि व्यवस्था के प्रति असन्तुष्टि के प्रगटीकरण के लिए विचारों को एक ऐसा साधन प्राप्त हो जाय जिसके माध्यम से एक साथ बहुत बड़े वर्ग तक अपनी बात पहुँचाई जा सके और जो इतना प्रभावशाली हो कि वह व्यवस्था के प्रति असन्तोष के भाव को मस्तिष्क से निकाल कर जनआकांक्षा में बदल दे, तो वह अपने युग में व्यवस्था के प्रति विद्रोह का वाहक बन जाता है। यह वैचारिक विद्रोह धीरे-धीरे संगठित विद्रोह में परिवर्तित हो क्रान्ति और परिवर्तन के नये रास्ते खोलता है। भारत की स्वाधीनता आन्दोलन के दौरान प्रेस, अभिव्यक्ति के ऐसे ही माध्यम के रूप में उपस्थित हुआ। इसलिए औपनिवेशिक भारत में प्रेस और मुद्रित साहित्य के प्रतिबन्ध पर अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता से जुड़ा प्रश्न तो है ही, उस दौरान मुद्रित साहित्य के क्रान्तिकारी स्वरूप को देखते हुए स्वतन्त्रता आन्दोलन में वैचारिक सम्प्रेषण के चीफ़टूल के रूप में इसकी पहचान बहुत महत्वपूर्ण है।

978-93-90702-39-8 | 2023 | ₹ 700.00

चौरी-चौरा : राष्ट्रीय आयाम की स्थानीय घटना

लेखक – हिमांशु चतुर्वेदी

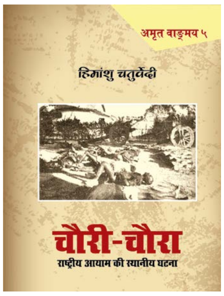

चौरी-चौरा को यदि राष्ट्रीय फलक पर समझना है तो जलियाँवाला बाग जाना होगा। एक तथाकथित सुसंस्कृत राष्ट्र ने निहत्थे भारतीयों का कत्लेआम किया। जनाक्रोश राष्ट्रीय हुआ और असहयोग आन्दोलन को इसके कारण आधार मिला। चौरी-चौरा का आक्रोश जलियाँवाला बाग की घटना का प्रत्युत्तर था, परन्तु दुर्भाग्यवश घटना ने असहयोग आन्दोलन को ही समाप्त कर दिया। विवेचना का प्रश्न है कि यह दुर्भाग्यवश था या एक सिद्धान्त की अवसरवादिता।

आवश्यकता है चौरी-चौरा को उसके खण्ड कालों में समझा जाना; जिससे यह मात्र एक स्थानीय घटना न होकर, राष्ट्रीय आन्दोलन की दिशा को परिवर्तित करने वाली एक अति महत्वपूर्ण घटना की तरह समझा जा सके।

978-93-90702-96-1 | 2023 | ₹ 1500.00

सुराज गीतावली : प्रतिबन्धित सुराजी गीत संचयन

लेखक – नरेन्द्र शुक्ल

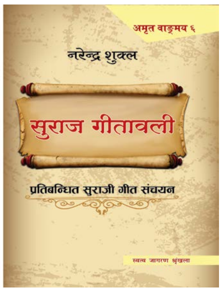

इन सुराजी रचनाओं को पढ़ने के बाद हम निश्चय ही कह सकते हैं कि गाँधी जिस तरह की अहिंसक फौज बनाना चाहते थे, उसकी मानसिकता व्यक्तित्व निर्माण के गाँधीवादी फॉमूले से भिन्न थी। व्यक्तित्व निर्माण के गाँधीवादी फार्मूले का अगर कोई पीक है तो वह सविनय अवज्ञा के दौरान पिकेटिंग के समय एक के बाद एक लहर के समान आती और हिंसक लाठियों, बन्दूक के कुन्दों और घोड़े की टापों से कुचल कर जाती, सत्याग्रही टोलियों का हाल सुनकर लगता है कि निश्चय ही यह वास्तविकता होगी।

वहीं, अहिंसक रचनाओं में क्रान्तिकारी कार्यक्रमों की पदावली का शुमार होना यह दर्शाता है कि आम जनमानस में स्वतन्त्रता आन्दोलन के तरीके को लेकर वैसा दो फाड़ नहीं था जैसा अमूमन इतिहासकारों द्वारा खड़ा किया गया है। यह रचनाएँ दर्शाती हैं कि आम जनमानस क्रान्तिकारी कार्यक्रमों और गाँधीवादी कार्यक्रमों को अपने भीतर समान रूप से जज़्ब कर रहा था और रचनाओं के माध्यम से जो बाहर आ रहा था, वह चल रहे स्वतन्त्रता आन्दोलन की समानान्तर समझ थी।

978-93-90702-63-3 | 2023 | ₹ 2700.00

सरस्वती : नदी घाटी सभ्यता एवं संस्कृति

लेखक – रत्नेश कुमार त्रिपाठी

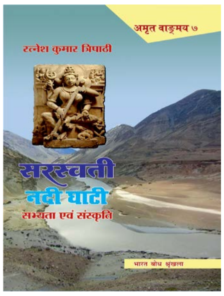

यह स्वाभाविक ही है कि भूत्थान-पतन के कारण सम्भवत: वैदिक जन अपने निवास स्थानों को छोड़कर दक्षिण तथा पूर्व की ओर पलायित होकर गंगा के आसपास जा बसे। इस प्रकार के स्थान परिवर्तन के उल्लेख हमें ऋग्वेद तथा ब्राह्मण एवं आरण्यक ग्रन्थों में प्रचुर मात्रा में मिलते हैं। ऐसा देखने को मिलता है कि सब प्राचीन नदियों को इस प्रकार के संकटों से गुजरना पड़ा। वेद पूर्वकालीन विंध्य पर्वतीय बस्तियों का सरस्वती के किनारे स्थलान्तर करने का उदाहरण इसी तथ्य को प्रकट करता है। सरस्वती के किनारे पर कृषि प्रधान हड़प्पा संस्कृति विकसित हुई। नागरी सभ्यता का उदय तथा विकास सरस्वती के ही तटों पर हुआ।

978-93-90702-95-4 | 2023 | ₹ 1500.00

भारतवर्ष का अंधकार युगीन इतिहास

लेखक – काशी प्रसाद जायसवाल

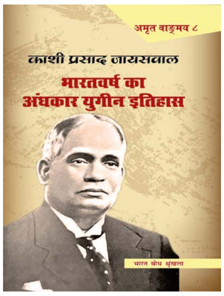

"नैव मूर्द्धाभिषिक्तास्ते।" ऐसी अवस्था में क्या यह कभी सम्भव है कि पुराण उन मूर्द्धाभिषिक्त राजाओं का उल्लेख छोड़ देंगे जो वैदिक मंत्रों और वैदिक विधियों के अनुसार राजसिंहासन पर अभिषिक्त हुए थे और जिनमें ऐसे कई राजा थे जिन्होंने आर्यों की पवित्र भूमि में एक दो नहीं बल्कि दस-दस अश्वमेध यज्ञ किये थे? यह एक ऐसा महत् कार्य है जो कलियुग के किसी ऐसे प्राचीन राजवंश ने नहीं किया था, जिसका पुराणों ने वर्णन किया है। भला ऐसा महत्वपूर्ण कार्य करनेवालों का उल्लेख पुराणों में किस प्रकार छूट सकता था? शुंगों ने दो अश्वमेध यज्ञ किये थे और शुंगों का उल्लेख पुराणों की उस सूची में है जिसमें सम्राटों के नाम दिये गये हैं। शातवाहनों ने भी दो अश्वमेध यज्ञ किये थे और पुराणों में उनका भी उल्लेख है। इसलिए जिन भार-शिवों ने दस अश्वमेध यज्ञ किये थे, वे किसी प्रकार छोड़े नहीं जा सकते थे। और वास्तव में वे छोड़े भी नहीं गये हैं।।

978-93-95472-16-6 | 2023 | ₹ 1600.00

सार्थवाह

लेखक – डॉ मोती चन्द्र

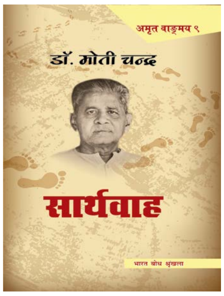

इस देश की पथ-पद्धति जानने के पहले इनके कुछ भौगोलिक आधारों को भी जान लेना आवश्यक है। भारत के उत्तर-पूरब में जंगलों से ढँकी पहाड़ियाँ और घाटियाँ हैं, जो मंगोल जाति को भारत में आने से रोकती हैं। फिर भी इन जंगलों और पहाड़ों से होकर मणिपुर और चीन के बीच एक प्राचीन रास्ता था, जिस रास्ते से चीन और भारत का थोड़ा बहुत व्यापार चलता रहता था। ईसा पूर्व दूसरी सदी में जब चीनी राजदूत चांगकियेन बलख पहुँचा। तब उसे वहाँ दक्षिणी चीन के बाँस देखकर कुछ आश्चर्य-सा हुआ। वास्तव में यूनान के ये बाँस आसाम के रास्ते मध्यदेश पहुँचते थे और वहाँ से बलख। इतना सब होते हुए भी उत्तर-पूर्वी रास्ते का कोई विशेष महत्व नहीं था, क्योंकि उसे पार करना कोई आसान काम नहीं था।

978-93-95472-15-9 | 2023 | ₹ 2000.00

सम्पत्ति शास्त्र

लेखक – महावीर प्रसाद द्विवेदी

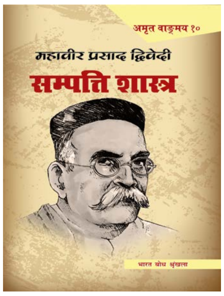

सम्पत्ति-शास्त्र को अँग्रेजी में "पोलिटिकल इकोनॉमी" कहते हैं। इस देश में किसी-किसी ने इसका नाम अर्थशास्त्र रखा है। परन्तु यह नाम इस शास्त्र का ठीक वाचक नहीं जान पड़ता। क्योंकि "अर्थ" शब्द के अनेक अर्थ होते हैं। केवल हिंदी जानने वालों के मन में "सम्पत्ति" या "धन" शब्दों के सुनने से तत्काल जो भाव उदित हो सकता है वह "अर्थ" शब्द के सुनने से नहीं हो सकता। "धनविज्ञान", "सम्पत्तिविज्ञान" या "सम्पत्ति-शास्त्र" यदि इस शास्त्र का नाम रखा जाए तो वह इस शास्त्र के उद्देश्य का विशेष बोधक हो और साधारण आदमियों की भी समझ में उसका मतलब झट आ जाए। "अर्थशास्त्र" कहने से यह बात नहीं हो सकती। इसी से हमने इस पुस्तक का नाम "सम्पत्ति-शास्त्र" रखना उचित समझा।

978-93-95472-14-2 | 2023 | ₹ 2000.00

सनातन संस्कृति के आधुनिक प्रणेता : हनुमान प्रसाद पोद्दार

लेखक – हिमांशु चतुर्वेदी

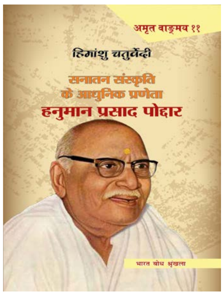

गीता प्रेस, धार्मिक पुस्तकें और हनुमान प्रसाद पोद्दार 'भाई जी' एक-दूसरे के पर्याय हैं। गीता प्रेस से प्रकाशित धार्मिक ग्रन्थों से लेकर 'कल्याण' पत्रिका आध्यात्मिक क्षेत्र में अग्रदूत के रूप में विद्यमान है। सेठ जयदयाल गोयनका ने गीता प्रेस की स्थापना 1923 में की, जिसे हनुमान प्रसाद पोद्दार जी ने वटवृक्ष का रूप दिया। उत्तर भारत की आध्यात्मिक, सामाजिक, साहित्यिक और राजनीतिक क्षेत्र में योगदान देने वाले 'भाई जी' को ऐतिहासिक दृष्टि से पिरोना महत्वपूर्ण है। गीता प्रेस के माध्यम से उन्होंने भारतीय सनातन संस्कृति की सेवा करते हुए भारत के समृद्ध ग्रन्थों-वाङ्मय एवं परम्पराओं की व्याख्या कर उनको जन-जन तक पहुँचाने का कार्य ही नहीं किया, अपितु राष्ट्रीय चेतना को भी नवीन ऊर्जा प्रदान की।

978-93-90702-55-8 | 2023 | ₹ 1250.00

कम्बुज देश : राजनैतिक और सांस्कृतिक इतिहास

लेखक – महेश कुमार शरण

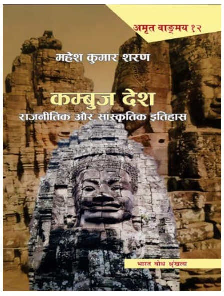

दक्षिण-पूर्वी सागरों पर भारतीय संस्कृति के विस्तार का इतिहास पाँचवीं शताब्दी ईसा पूर्व से चौदहवीं शताब्दी ईसवी तक का है। इस संस्कृति को ले जाने का श्रेय भारतीय व्यापारियों को है, जो वाणिज्य व्यापार की श्रीवृद्धि के लिए उन देशों में गये, किन्तु वाणिज्य, सांस्कृतिक, धार्मिक कार्यों के अतिरिक्त अपनी स्थलीय सीमा के उस पार भारत का जो प्रभाव फैला था, उसमें राजनीतिक प्रभाव भी कम नहीं था और ईसा की प्रथम शताब्दी से ही यह बात हमें देखने को मिलती है कि अनाम, कोचीन-चीन और प्रशान्त महासागरीय द्वीपों में हिन्दू राज्य अथवा हिन्दू प्रभावशाली राज्य थे। 'रामायण' में हमें जावा और सुमात्रा के विषय में उल्लेख मिलता है। ईसवी सन् के आरम्भ होने के पहले से ही दक्षिण भारत के बन्दरगाहों और प्रशान्तसागरीय द्वीपों के बीच आवागमन जारी था। लेकिन लोगों का भारत से जाकर इन द्वीपों में बसने का ठोस प्रमाण ईसा की पहली शताब्दी में ही मिलता है।

978-93-90702-69-5 | 2023 | ₹ 1500.00

 PRICES ARE SUBJECT TO CHANGE WITHOUT ANY PRIOR NOTICE

INDIA - THE MOTHER OF DEMOCRACY

AUTHOR : RAGHUVENDRA TANWAR & UMESH ASHOK KADAM

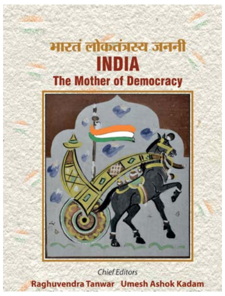

India had a history of republics that existed before and after Buddha. These were located in contemporary North Bihar, Eastern Uttar Pradesh (U.P.), Balochistan, Sindh, Punjab and in many other parts of ancient India. One such republics was Lichchhavi which existed along with Sakya, Videha, Malla, Malavas (Malloi in Greek), Sivis (Siboi in Greek) and other republics. While Lichchhavi, Sakya and Malla existed in Eastern India (contemporary Varanasi and Gorakhpur regions of Eastern U.P and Darbhanga and Muzzaffarpur regions of North Bihar) Malavas and Sivis (as referred in Jataka, in Patanjali's Mahabhasya, it is referred as Saibyas mahajanpadas) existed in North West India (now in Pakistan and Afghanistan)". Lichchhavi was a part of Vajjika territory, one of the 16 mahajanapadas which existed around the contemporary village of Basarh in Vaishali districts. It's remnants were excavated in the 20th century, first time during 1903-04, then in 1913-14, in 1950 and in 1958-59. The references of Lichchhavi are in Pali, Tibetan, Jain, Greek, Nepalese, Chinese and Sanskrit texts. The inscriptions on stone pillars, coins and copper plate are the other available sources.

The archaeological excavations at the village Basarh conclusively prove its existence in ancient India. It was, in fact, in far developed form than even contemporary Indian democracy.

Greek texts, referring to Alexander's invasion and his defeat in India often mention about different Indian republics of the time with whom residents of Lichchhavi had good relations.

Indian texts, both in Pali and Sanskrit, also refer about the republics of North West now in Afghanistan and Pakistan.

978-93-95472-03-6 | 2022 | ₹ 5000.00

पंडित दीनदयाल उपाध्याय

जीवन दर्शन और समसामयिकता (पाँच खण्डों में)

मुख्य संपादक – बजरंग लाल गुप्ता

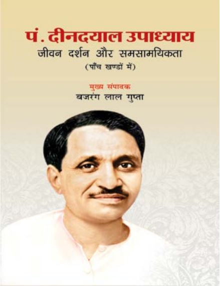

हिंदू धर्म में संस्कारों का बड़ा महत्त्व है। वैदिक काल में ऋषि मुनियों ने संस्कारों को प्रचलित किया जो दैनिक जीवन की क्रियाओं, नियमों का समुच्चय बना। शुद्ध, परिष्कृत, नियमबद्ध जीवन जीने या संस्कारों के अनुरूप जीवन प्रथा और जीवन के नियम बन गए। इससे शारीरिक, नैतिक, आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त हुआ। हिंदू धर्म में सोलह संस्कारों की अवधारणा वैदिक काल से प्रचलित रही है। बौद्ध ध र्म और जैन धर्म ने थोड़े बहुत परिवर्तन अवश्य किए। प्राचीन हिंदू धर्म में दर्शन परंपरा बहुत पुरानी है। सांख्य, योग, न्याय, वैशैषिक, मीमांसा और वेदांत षड्दर्शन प्रसिद्ध हैं। इनके प्रणेता कपिल, पतंजलि, गौतम, कणाद, जैमिनी और बादरायण प्रमुख थे। बुद्ध के बाद शंकराचार्य के काल में इन दर्शनों का उदय हुआ। नि:संदेह, एकात्म मानवदर्शन के अधिष्ठाता दीनदयाल जी ऋषि तुल्य थे। घर-गृहस्थ से कोसों दूर वे तो अनिकेत थे, पर पूरा राष्ट्र उनका घर था। वे तपस्वी थे, महान् आत्मा थे, वाद-विवादों से परे पूर्ण मानवतावादी, राष्ट्रवादी, हिंदू धर्म के संरक्षक और समाज की सर्वांगीण उन्नति के लिए कृतसंकल्प थे। 1952 से 1968 तक राजनीति के कर्मयोगी के रूप में वे धर्म, अध्यात्म, मानवीय मूल्यों के महान् पक्षधर थे। वे कर्मयोगी बने लेकिन निष्काम सेवाव्रती थे। ऐसे महापुरुष केवल उंगलियों पर गिने जाते हैं।

978-93-90702-78-7 | 2022 | ₹ 5500.00

बिरसा मुंडा – जनजातीय गौरव

लेखक – आलोक कुमार चक्रवाल

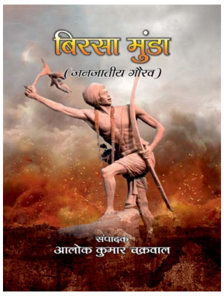

बिरसा मुंडा के आर्विभाव को लगभग डेढ़ सदी एवं उनके तिरोभाव को प्राय: एक सदी हो गई है। कृतज्ञ राष्ट्र अपने इस स्वतंत्रता नायक को श्रद्धांजलि अर्पित करता रहा है। प्रस्तुत पुस्तक भी उनकी पुनीत स्मृति में श्रद्धा का एक पुष्प है। उन्होंने अपने जीवन, कार्यों एवं वाणी द्वारा जनजातियों को ऐसे समय में आत्मविश्वास दिया जब वह निराशा के समुद्र में डूबे हुए थे। बिरसा मुंडा अप्रतिम जन संचारक एवं असाधारण लोकनायक थे, जो भारतीय स्व-जागरण तथा प्रतिरोध के पर्याय रहे हैं तथा जनजातियों का चतुर्मुखी उत्थान चाहते थे और उनके कार्यों में राष्ट्रीय नवनिर्माण के सभी सूत्र मिल जाते हैं। प्रस्तुत पुस्तक कुल 30 अध्यायों में विभाजित है। इसमें विषय-विशेषज्ञों द्वारा बिरसा मुंडा के रूप में एक प्रखर राष्ट्रीय नायक के जीवन दर्शन, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा धार्मिक चिंतन का व्यापक अध्ययन करते हुए भारतीय इतिहास में बिरसा मुंडा के प्रतिरोध को यथासंभव रेखांकित करने का प्रयत्न किया गया है।

978-93-90702-70-1 | 2022 | ₹ 2100.00

लोक परम्पराओं में स्व का बोध

लोक के स्व पर आधारित भारत के पुनरुत्थान की संकल्पना

संपादक-प्रो. बृज किशोर कुठियाला, प्रो. संजीव कुमार शर्मा, प्रो. श्रीप्रकाश सिंह

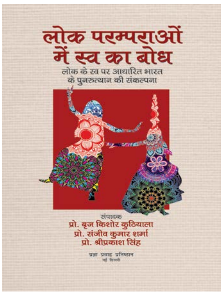

लोक परम्पराएँ समाज की सांस्कृतिक विरासत की दर्पण तो हैं वे लोक के जीवन मूल्यों और धारणाओं की संवाहक भी हैं। परम्पराओं के संदर्भों व उनके विज्ञान के स्वरूप को समझने से ही राष्ट्र की वास्तविक समझ बनती है। पश्चिम के देशों की परम्पराएँ मृत होती रही और नयी बनती गयी। भारतवर्ष की संस्कृति में परिवर्तनशीलता के साथ निरंतरता भी रही। हमारी कई परम्पराएँ हजारों वर्ष पुरानी हैं। इस जम्बू द्वीप पर चिरकाल से चली आ रही हैं परम्पराओं में प्रत्यक्ष एकरूपता व समान उत्पत्ति भी स्पष्ट सामने आती है। ऐतिहासिक विस्मृति के कारण हमने परम्पराओं को विभिन्नताओं और भेद के रूप में प्रस्तुत करना प्रारंभ कर दिया। इस पुस्तक में परम्पराओं पर आधारित भारत के उस स्व को पुन: स्थापित करने का प्रयास किया है जिस स्व की अनुभूति ने भारत को विश्व का श्रेष्ठतम राष्ट्र बनने का मार्ग प्रशस्त किया था। भारत के सांस्कृतिक पुनरुत्थान के महायज्ञ में आहुति अर्पण करने का प्रयास है।

978-93-90702-76-3 | 2022 | ₹ 1200.00

RAM JANAM BHUMI AYODHYA - PAST TO PRESENT

Author : Amit Rai Jain

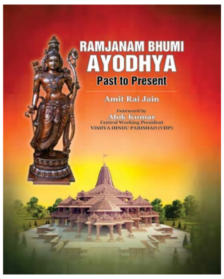

This book provides a detailed insight into the history of the city of Ayodhya, the birthplace of Shri Ram. You have delicately and intricately traced the roots of this divine city and have presented the timeline of the important events in the history of Ayodhya to its present times. This book gives the reader a glimpse to the lives of the Warrior-Saints of the Ayodhya movement including Pujya Devraha Baba, Paramhans Shri Ramchandra Das, Mahant Avaidyanath, Pujya Shankaracharya Jayendrda Saraswati as also to the lives of Shri Ashok Singhal, Shri Moropant Pingle and Shri Champat Rai.

978-93- 90702-11-4 | 2023 | ₹ 2000.00

NETAJI, AZAD HIND SARKAR & FAUJ-REMOVING SMOKESCREENS (1942-47)

Author : Kapil Kumar

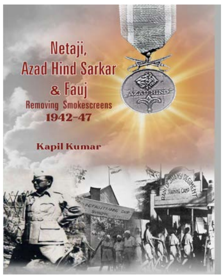

Suppression and distortion of historical facts, events and personalities by political leaders, left ideologues and colonial apologists have been a consistent effort in order to serve the vested interests as far as the personality of Netaji, the heroic struggles of Azad Hind Fauj, and the people of Indian origin in South-East Asian countries are concerned. In spite of the classical works of Azad Hind Fauj officers published as their memoirs or books, the history of this armed struggle for the liberation of the motherland was not only suppressed and distorted but was sidelined in history books. The present work is an attempt to remove the smokescreen that had been deliberately planted as a cover to hide from the present generation the historical realities that explain the sacrifices of Netaji, and Azad Hind Fauj. The author was inspired to pen this work after having curated the Netaji and INA museum at Red Fort as the chief historian. This book apprises the readers with many such aspects that have remained in the archival files only like the M Organization, Azad Hind Dal - a nationalist organization for governance, the Rani Jhansi Regiment - the first modern women fighting force, Netaji at the battle fronts, attempts on Netaji's life, the honours awarded to AHF braves and so on. Similarly, it highlights the massive contribution and sacrifices of a shepherd to a millionaire of Indian origin in South-East Asian countries. It discusses the spying missions, trials and executions, and demolishes the so-called plane crash theory of Netaji's death. The book also discusses the role of certain families and individuals besides the disappearance of the Azad Hind treasures and the role of the Prime Minister of Indian dominion, Jawaharlal Nehru, in relation to the AHF in compliance with Wavell, Mountabettan and Auchinleck. The author has also discussed the spying missions prosecutions and executions of the AHF soldiers. In fact, the book unveils many unknown facets which may be an eye-opener for all those interested in Netaji, researchers, historians and young readers.

978-93-90702-40-4 | 2022 | ₹ 3000.00

HINDUISM IN KASHMIR

Author : Amit Rai Jain

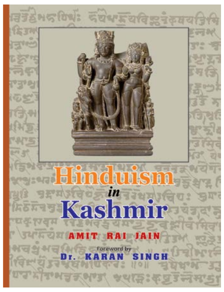

The very name 'Kashmir', immediately evokes thoughts about its scenic beauty and salubrious climate. It is described variously for these two attributes, but equally significant, though less appreciated at the popular level, are several aspects of the Hindu history, culture, religion, literature, architecture and art of Kashmir that evolved and permeated this great abode of human heritage in ancient times.I congratulate the author for this good work in having described various aspects of Hinduism in Kashmir in a simple and comprehensible manner. The book is a welcome addition to the already existing corpus of literature on Kashmir and must stimulate a good amount of renewed interest in the readers. I wish the book success both in its commercial journey and scholarly reception.

978-93-90702-17-6 | 2022 | ₹ 800.00

NATH SAMPRADAYA

Author : Rajesh Singh

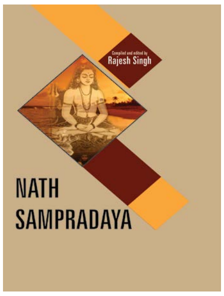

The followers of Natha Sampradaya also known as Gorakhnathis is a general descriptive term applied for those yogis who are fervent followers of Gorakhnath, an expression of Lord Shiva. Gorakhnathis form the main group and an elite class of Yogis. The Yogis of Nath Sampradaya are also known as Gorakhnatki, and Darsani. They practice the traditional practice of the Hatha Yoga and wear huge earrings which as a distinctive mark of their order. Another important custom of their tradition is the unique practice of getting the cartilage of their ears split for the insertion of the earrings. Women of the sect are similarly called Nathni. The Natha Yogis believe that the practice of splitting the ears was started by Gorakhnath, and that the designation Kanphata (literally, Split-eared) was a term of disrespect used for these Yogis by Muslims. The word 'Yogi' is a general term used for ascetics. Generally, Yogis travel for pilgrimages, visiting holy places all over the country and make their monasteries their headquarters. Some do live alone, in the jungles, practising Yoga.

978-93-90702-28-2 | 2021 | ₹ 1000.00

CELLULAR JAIL OF ANDAMAN AND NICOBAR ISLANDS

Author : Amit Rai Jain

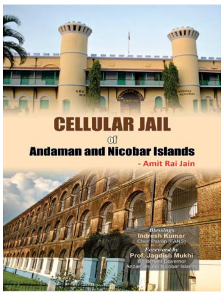

The Cellular Jail of Andaman Nicobar is an exemplary feature of the Indian freedom struggle. Every prisoner of this jail bore the atrocities and the cruelties of the British and proudly and laughingly gave up his life in the path of the freedom struggle of India.

978-93-90702-86-2 | 2022 | ₹ 1200.00

नाथ पंथ-संस्कृति, चिंतन, राष्ट निर्माण और विरासत

लेखक – राजेश सिंह

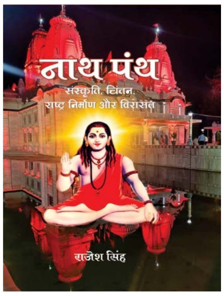

978-93-90702-46-6 | 2023 | ₹ 1100.00

PRICES ARE SUBJECT TO CHANGE WITHOUT ANY PRIOR NOTICE

ISBN	TITLE	AUTHOR	EDITION	PRICE
978-93-95472-08-1	महिमा धर्म : सामाजिक-सांस्कृतिक सन्दर्भ	प्रो. आलोक कुमार चक्रवाल	2023	2000
978-93-90702-53-4	नाथ पंथ : योग और दर्शन	प्रो. राजेश सिंह	2023	1500
978-93-90702-45-9	नाथ पंथ : साधना और साहित्य	प्रो. राजेश सिंह	2023	1250
978-93-90702-46-6	नाथ पंथ : संस्कृति चिन्तन, राष्ट्र निर्माण और विरासत	प्रो. राजेश सिंह	2023	1100
	नाथ पंथ का वैश्विक प्रदेय	प्रो. राजेश सिंह	2023	1000
978-93-95472-17-3	मैं तुम्हारे पास भी हूँ मैं तुम्हारे साथ भी हूँ	अरूण दिवाकर नाथ वाजपेयी	2023	700
978-93-95472-07-4	काल और ताल (दिल्ली-एनसीआर का लोक संगीत)	अनूप लाठर एवं प्रो. एच.के सलूजा	2023	1200
	नेताजी, आज़ाद हिन्द सरकार और फौज भ्रांतियों से यथार्थ की ओर 1942-47	कपिल कुमार	2023	–
978-93-90702-78-7	पं दीनदयाल उपाध्याय जीवन दर्शन और समसामयिकता (पाँच खण्डों में)	डॉ. बजरंग लाल गुप्ता	2022	5500
978-93-90702-07-7	पं दीनदयाल उपाध्याय : एकात्म मानववाद	डॉ. बजरंग लाल गुप्ता	2022	1000
978-93-90702-13-8	पं दीनदयाल उपाध्याय : सामाजिक एवं सांस्कृतिक दर्शन	डॉ. बजरंग लाल गुप्ता	2022	1400
978-93-90702-14-5	पं दीनदयाल उपाध्याय : अर्थ चिन्तन	डॉ. बजरंग लाल गुप्ता	2022	1200
978-93-90702-15-2	पं दीनदयाल उपाध्याय : पंचवर्षीय योजनाओं का सापेक्ष मूल्यांकन	डॉ. बजरंग लाल गुप्ता	2022	1500
978-93-90702-21-3	पं दीनदयाल उपाध्याय : कश्मीर समस्या एक दृष्टिकोण	डॉ. बजरंग लाल गुप्ता	2022	900
978-93-90702-22-0	पं दीनदयाल उपाध्याय : व्यक्ति, विचार और समसामायिकता	डॉ. बजरंग लाल गुप्ता	2022	350
978-93-90702-30-5	भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष के जनजातीय नायक	प्रो. आलोक कुमार चक्रवाल	2022	1800
978-93-90702-76-3	लोक परम्पराओं में स्व का बोध	प्रो. बृज किशोर कुठियाला, प्रो. संजीव कुमार शर्मा, प्रो. श्री प्रकाश सिंह	2022	1200
978-93-90702-36-7	प्राचीन योगशास्त्र भूमिका - योगाचार्य भीम सिंह	न्यायमूर्ति देवी प्रसाद सिंह	2022	2400
978-93-90702-4-2	युग योद्धा योगी	प्रभा ललित सिंह	2022	1000
978-93-90702-38-1	प्रेमचन्द साहित्य : राष्ट्रीय बनाम साम्प्रदायिकता	ईश्वर दास जौहर	2022	850
978-93-90702-47-3	श्री गुरुजी: एक समग्र आधुनिक विचारक	सीमा टमटा कंसल	2022	600
978-93-90702-56-5	संस्कृति, दर्शन और जीवन	विनोद मणि दिवाकर	2022	1150
978-93-90702-58-9	महात्मा गाँधी का सामाजिक दर्शन	उर्मिला सिंह	2022	1200
978-93-90702-59-6	गाँधी जी अैर ग्राम स्वरोजगार	सुधीर प्रताप सिंह	2022	1250
978-93-90702-60-2	गाँधीजी एवं दलित आंदोलन	चन्द्र शेखर सिंह	2022	1000
978-93-90702-65-7	भारतीय देवी देवता एवं उनकी महत्ता	विनोद मणि दिवाकर	2022	950
978-93-90702-70-1	बिरसा मुंडा (जनजातीय गौरव)	प्रो. आलोक कुमार चक्रवाल	2022	2100
978-93-90702-73-2	समतल अैर अन्य कविताएँ	आनंद बहादुर	2022	700
978-93-90702-76-3	लोक परम्पराओं में स्व का बोध	बृज किशोर कुठियाला	2022	1200
978-81-941709-4-5	मीडियाकर्म योग्यता और यथार्थ	प्रमोद कमुार	2022	1250
978-93-90702-79-4	मौसम खुशबू रंग हवाएँ	आनंद बहादुर	2022	700
978-93-90702-80-0	रॉबर्ट गिल की पारो	प्रमिला वर्मा	2022	1800
978-93-90702-82-4	सिंहावलोकन गदर से गणतंत्र	के.डी. शर्मा	2022	1800
978-93-90702-89-3	आद्रिका	प्रभा ललित सिंह	2022	600

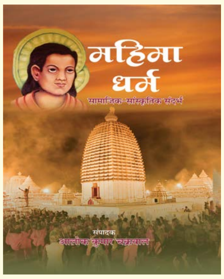

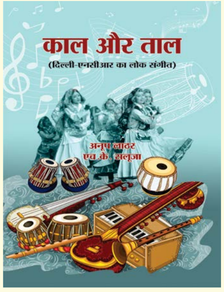

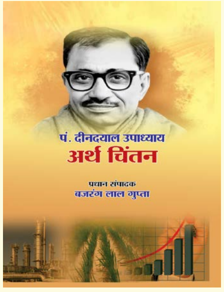

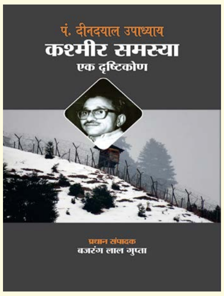

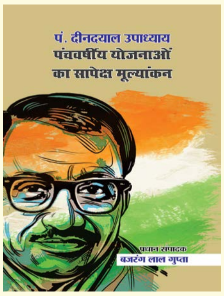

ISBN	TITLE	AUTHOR	EDITION	PRICE
978-93-90702-98-5	राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 की गंगोत्री भारतीय ज्ञान परंपरा	अनिल कुमार राय	2022	1000
978-81-945561-9-0	हिन्दी बाल साहित्य में कुछ साक्षात्कार	प्रकाश मनु	2021	1750
978-81-948605-5-6	अंग्रेजी शासनकाल में भारत की अर्थव्यवस्था	डॉ. बजरंग लाल गुप्ता	2021	2500
978-81-948605-6-3	पचास कविताएँ	दिविक रमेश	2021	525
978-81-948605-7-0	अँधेरा लीपता है मुझे	राजकुमार कुम्भज	2021	530
978-81-948605-9-4	ओ मातृभूमि	सुधा कुमारी	2021	450
978-81-948605-1-8	हिन्दू : धर्म संस्कार एवं संस्कृति	प्रो. अरविन्द कुमार	2021	1600
978-93-85754-95-1	संस्कृत नाट्य साहित्य	सविता रानी	2021	550
978-93-90702-01-5	गांधी के राम	अरुण प्रकाश	2021	300
978-93-90702-03-9	गरुड़ एक विचार है	राजकुमार कुम्भज	2021	515
978-93-90702-04-6	कोरोनायन	राजेन्द प्रसाद	2021	550
978-93-90702-09-1	मलेशिया यात्रा मर्डेका की मीनारें	कमलेश भट्ट कमल	2021	600
978-93-90702-10-7	शिव और शक्ति	विनोद मणि दिवाकर	2021	900
978-93-90702-19-0	अघोर (The Shadow of Shiva)	प्रभा ललित सिंह	2021	1100
978-93-90702-27-5	पीड (The Pain)	प्रभा ललित सिंह	2021	700
978-93-90702-33-6	मन मायावी	प्रभा ललित सिंह	2021	800
978-93-90702-42-8	मेरे घर आना ज़िदगी	संतोष श्रीवास्तव	2021	1100
978-81-848605-0-1	बुनकर की बेटी	ममता मेहरोत्रा	2020	800
978-81-941709-0-7	हिमालय (The Unspoken Truth)	प्रभा ललित सिंह	2020	800
978-81-941709-1-4	मालवगढ़ की मालविका	संतोष श्रीवास्तव	2020	550
978-81-941709-2-1	ग्लोबल गाँव का आदमी	मंजुश्री गुप्ता	2020	600
978-81-941709-3-8	जादुई चिराग	गिरीश पंकज	2020	600
978-81-941709-5-2	ज़िदगी तेरे कितने रुप	राजेन्द्र प्रसाद	2020	400
978-81-941709-6-9	दिविक रमेश निगाहों में	प्रवीण शर्मा	2020	1450
978-81-941709-7-6	श्रीमद् भगवद्गीता	मुकेश	2020	800
978-93-85754-44-9	हिन्दू संस्कार	हरप्रीत कौर	2020	1250
978-81-941709-9-0	रामराज्य आधुनिक परिवेश में भूमिका - श्री शक्ति शांतानंद महार्षि	न्यायमूर्ति देवी प्रसाद सिंह	2020	2000
978-81-945561-1-4	पत्रकारिता का स्थानीयकरण	डॉ. हरीश चंद्र लखेड़ा	2020	850
978-81-945561-4-5	तलाश	ममता मेहरोत्रा	2020	1000
978-81-945561-5-2	नदियों के गीत	डॉ. हरीश चंद्र लखेड़ा	2020	450
978-81-945561-7-6	तानी सप्तदिनानी	ममता मेहरोत्रा	2020	600
978-81-945561-8-3	प्रसुप्त सागर	डी.सी. अत्री	2020	1320
978-81-948605-3-2	महाभारत के भीष्म	न्यायमूर्ति देवी प्रसाद सिंह	2020	2000
978-93-85754-88-3	बाल साहित्य	दिविक रमेश	2020	700
978-93-90702-02-2	बौद्ध तीर्थ स्थल	योगेन्द्र सिंह	2020	700
978-93-85754-22-7	करवट बदलती सदी आमची मुम्बई	संतोष श्रीवास्तव	2019	500
978-93-85754-28-9	प्रेम-प्रेमिकाएँ : विवाह-पत्नियाँ	डॉ. सुरेन्द्र नारायण यादव	2019	550
978-93-85754-65-4	तुमसे मिलकर (कविता संग्रह)	संतोष श्रीवास्तव	2019	600
978-93-85754-66-1	फुनगियों पे धूप	प्रमिला वर्मा	2019	650
978-93-85754-67-8	पूँजीवादी सेल्फी	गिरीश पंकज	2019	600
978-93-85754-68-5	सेक्टर-16 : One Way Street	प्रभा ललित सिंह	2019	1000
978-93-85754-69-2	वे जो थे हममें से कुछेक	राजकुमार कुम्भज	2019	700
978-93-85754-70-8	एक नदी बह चली	वीरेन्द्र गोयल	2019	750

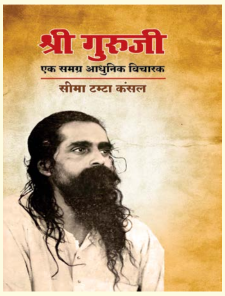

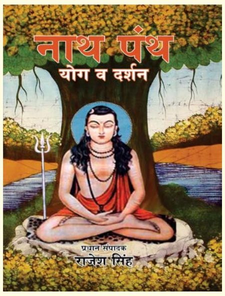

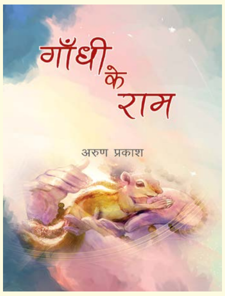

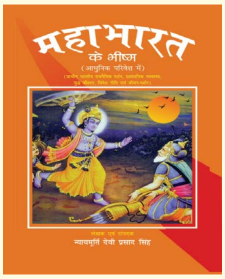

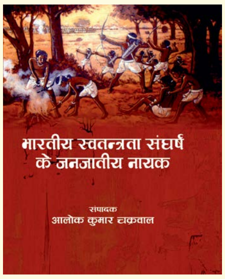

ISBN	TITLE	AUTHOR	EDITION	PRICE
978-93-85754-71-5	दिल्ली-35	वीरेन्द्र गोयल	2019	800
978-93-85754-72-2	नीला कोट	बी.डी. गोयल	2019	500
978-93-85754-73-9	पुरुषोत्तम दास कृत जैमिनी पुराण	जगदीश पीयूष	2019	1000
978-93-85754-76-0	यात्रा	डॉ. प्रमोद जैन	2019	300
978-93-85754-89-0	पढ़ते समझते	दिविक रमेश	2019	1800
978-93-85754-13-5	दूसरा मृत्युंजय	प्रभा ललित सिंह	2018	425
978-93-85754-14-2	संवाद का स्वराज आधार लेख - मा. सुनील आंबेकर	प्रो. अनिल कुमार राय	2018	1000
978-93-85754-15-9	कहाँ कहाँ से गुजर गया	प्रो. दिलीप सिंह	2018	525
978-93-85754-49-4	भारतीय संस्कृति:निर्माण एवं विभाजन की प्रकृति	के.एस.श्रीवास्तव	2018	1250
978-93-85754-16-6	उजड़े दयारों का बेबाक अफसाना	राजकुमार कुम्भज	2018	500
978-93-85754-18-0	ईश्वर-अस्तित्व और प्राप्ति	हशमत अली	2018	650
978-93-85754-20-3	घोडे नहीं होते तो खिलाफ होते	राजकुमार कुम्भज	2018	400
978-93-85754-21-0	अदम गोण्डवी	जगदीश पीयूष	2018	1200
978-93-85754-23-4	हम पैदल आए द्वार तक	कन्हैयालाल चंचरीक	2018	350
978-93-85754-24-1	सहस्राब्दि की प्रथम सुबह (तथा अन्य कविताएँ)	कन्हैयालाल चंचरीक	2018	300
978-93-85754-25-8	ख्वाबों के पैरहन	संतोष श्रीवास्तव एवं प्रमिला वर्मा	2018	1100
978-93-85754-26-5	काशीवास	गिरीश पंकज	2018	550
978-93-85754-27-2	लेखकों की दुनिया	सूरज प्रकाश	2018	800
978-93-85754-30-2	खौलेगा तो खुलेगा	राजकुमार कुम्भज	2018	350
978-93-85754-33-3	यादें (मेरा अनमोल खजाना)	ओमवीर तोमर	2018	350
978-93-85754-34-0	कुछ ऐसे ख्वाब थे	ओमवीर तोमर	2018	900
978-93-85754-38-8	तंत्र के पंजों में लोकतंत्र	बी एल गौड़	2018	550
978-93-85754-60-9	भारत में निर्धनता एवं बाल मजदूरी	हरप्रीत कौर	2018	1250
978-93-85754-09-8	अन्तर्यात्रा व अन्य कहानियां	आभा भारती	2017	650
978-93-85754-10-4	लौट आओ दीप शिखा	संतोष श्रीवास्तव	2017	600
978-93-85754-41-8	साहित्य जगत की महान विभूतियाँ	पाल, वाई.	2017	1100
978-93-85754-11-1	ये पुराने पत्र	भारत भारद्वाज	2017	1150
978-93-85754-12-8	जड़ नहीं हूं मैं	राजकुमार कुम्भज	2017	600
978-93-85754-19-7	आधुनिक भारत के भगीरथ श्री नरेन्द्र मोदी : काव्य-कृति भूमिका - अमित शाह	अजय कुमार श्रीवास्तव	2017	700
978-93-85754-02-9	अक्सों में तुम	प्रमिला वर्मा	2016	500
978-93-85754-03-6	यादें महकी जब	दिविक रमेश	2016	700
978-93-85754-04-3	प्राचीन भारत में धार्मिक एवं दार्शनिक शिक्षाएं भूमिका - इन्द्रेश कुमार	अमित राय जैन एवं आंचल जैन	2016	1200
978-93-85754-05-0	टापू पर अकेले	डॉ. अमरेन्द्र मिश्र	2016	650
978-93-85754-06-7	प्रार्थना से मुक्त - कविताएँ	राजकुमार कुम्भज	2016	350
978-93-85754-07-4	बागी कठपुतलियाँ	संजीव	2016	625
978-93-85754-08-1	लहरों की बासुरी तथा अन्य कहानियां	सूरज प्रकाश	2016	900
978-81-930348-1-1	खंड-खंड पाखंड	शशि शेखर	2015	800
978-81-930348-2-8	बदलाव की आहटें	शशि शेखर	2015	925
978-81-930348-3-5	मेरे हमकलम	रविन्द्र कालिया	2015	1000

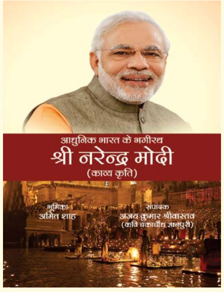

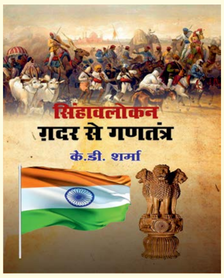

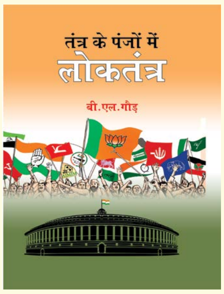

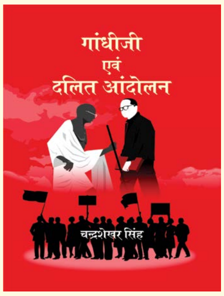

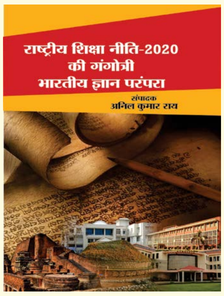

ISBN	TITLE	AUTHOR	EDITION	PRICE
978-81-930348-4-2	समझा परखा	दिविक रमेश	2015	900
978-81-930348-5-9	अवतरण (मूल लेखक - कामेल काल्चेव)	गंगा प्रसाद विमल	2015	800
978-81-930348-6-6	समीप और समीप	से. रा. यात्री	2015	375
978-81-930348-7-3	स्त्री विमर्श का यथार्थ	ममता कालिया	2015	450
978-81-930348-8-0	काव्य का पाठ : सरस और सुन्दर	निर्मला जैन	2015	850
978-81-930348-9-7	काव्यकृति (रूप और रचना)	निर्मला जैन	2015	775
978-93-90702-85-5	INDIA AWAKE (HISTORICALLY REVISED SECOND EDITION) FOREWORD BY JUSTICE SHIVA KIRTI SINGH	JUSTICE DEVI PRASAD SINGH	2023	3000
978-93-90702-11-4	RAMJANAM BHUMI AYODHYA : PAST TO PRESENT FOREWORD BY ALOK KUMAR	DR. AMIT RAI JAIN	2023	2000
978-93-90702-00-8	SARASWATI : THE MYSTICAL RIVER OF INDIA FOREWORD BY LOKESH CHANDRA	DR. AMIT RAI JAIN	2023	1000
	FACETS OF NATH PANTH	PROF. RAJESH SINGH	2023	850
978-93-85754-90-6	COINS OF INDIA	DR. AMIT RAI JAIN	2023	4000
978-93-90702-40-4	NETAJI, AZAD HIND SARKAR & FAUJ : REMOVING SMOKESCREENS 1942-47	PROF. KAPIL KUMAR	2023	3000
978-93-90702-41-1	NETAJI SUBHASH CHANDRA BOSE	DR. AMIT RAI JAIN	2023	800
978-93-90702-90-9	498A: FEARS & DREAMS	PROF. VIKAS SHARMA	2022	500
978-93-90702-72-5	ANCIENT INDIAN LAW FOREWORD BY JUSTICE ASHOK BHUSHAN	JUSTICE DEVI PRASAD SINGH	2022	2700
978-93-90702-86-2	CELLULAR JAIL OF ANDAMAN & NICOBAR ISLANDS FOREWORD BY PROF. JAGDISH MUKHI	DR. AMIT RAI JAIN	2022	1200
978-93-90702-71-8	CRITICAL APPROACH TO INDIAN FICTION ENGLISH	PROF. PURNIMA GUPTA	2022	650
978-93-90702-52-7	GANDHI & RACISM	DR. SURESH CHANDRA	2022	1200
978-93-90702-51-0	GANDHI & RURAL DEVELOPMENT	PROF. HARENDRA SINGH	2022	1200
978-93-90702-57-2	GANDHI, AMBEDKAR & INDIAN DALIT	DR. AJAY SINGH	2022	1200
978-93-90702-31-2	HERITAGE OF KRISHNA & INDIAN CULTURE	DR. VINOD MANI DIWAKAR	2022	1200
978-93-90702-17-6	HINDUISM IN KASHMIR FOREWORD BY DR. KARAN SINGH	DR. AMIT RAI JAIN	2022	800
978-93-90702-74-9	I.A.S. TODAY	PROF. VIKAS SHARMA	2022	500
978-93-90702-83-1	'INTEGRAL HUMANISM' OF PANDIT DEENDAYAL UPADHYAYA	PROF. RAJESH SINGH	2022	800
978-93-90702-50-3	KING OF MEWAR : MAHARANA PRATAP FOREWORD BY KALRAJ MISHRA	DR. AMIT RAI JAIN	2022	600
978-93-90702-87-9	SARDAR PATEL IN THE BARDOLI MOVEMENT	K.D. SHARMA	2022	1200
978-93-90702-43-5	SHER-E-PUNJAB : MAHARAJA RANJIT SINGH FOREWORD BY PADMA SHRI PROF. HARMOHINDER SINGH BEDI	DR. AMIT RAI JAIN	2022	1000
978-93-90702-88-6	THE TIDE	DR. SUDHA KUMARI	2022	150
978-93-85754-32-6	COINS IN MODERN INDIA FOREWORD BY RAJENDER MARU	DR. AMIT RAI JAIN	2021	900
978-93-90702-35-0	CULTURE, SOCIETY & LIFE	DR. VINOD MANI DIWAKAR	2021	1050
978-93-90702-20-6	PHILOSOPHY CULTURE & CIVILIZATION	DR. VINOD MANI DIWAKAR	2021	1200
978-81-948605-8-7	SPIRITUALITY OF YOGA	DR. VINOD MANI DIWAKAR	2021	1400
978-81-948605-4-9	VAISHNAVISM IN NORTH EAST INDIA	PROF. ARVIND KUMAR	2021	800
978-93-90702-34-3	WE WOMEN FOREWORD BY SYED ABDUL MOIN	MAMTA MEHROTRA	2021	700

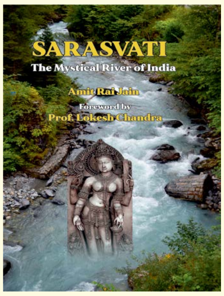

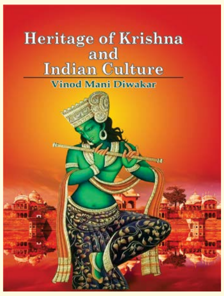

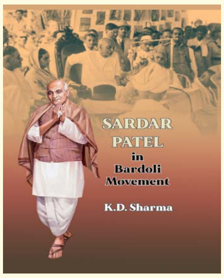

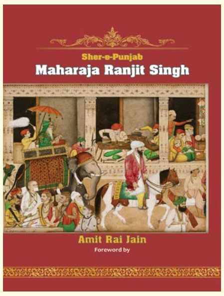

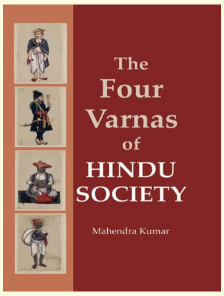

 PRICES ARE SUBJECT TO CHANGE WITHOUT ANY PRIOR NOTICE

ISBN	TITLE	AUTHOR	EDITION	PRICE
978-93-85754-79-1	AGHORIES OF INDIA FOREWORD BY SWAMI AVDHESHANAND GIRI JI	DR. AMIT RAI JAIN	2020	800
978-93-85754-81-4	CHANAKAYA : FATHER OF MODERN ECONOMICS FOREWORD BY DR. BAJRANG LAL GUPTA	DR. AMIT RAI JAIN	2020	800
978-93-85754-96-8	FOUR VARNAS OF HINDU SOCIETY	MAHENDER KUMAR	2020	750
978-93-85754-92-0	FUTURE NEWS ROOM FOREWORD BY DR. A. SURYA PRAKASH	PRAMOD KUMAR	2020	3000
978-93-85754-99-9	GREAT ASHOKA FOREWORD BY DR. BALMUKUND PANDEY	DR. AMIT RAI JAIN	2020	800
978-81-945561-3-8	HEALING WITH NATURE FOREWORD BY SHRIPAD NAIK	DR. ANIL JAIN	2020	1600
978-93-85754-98-2	MORAL PHILOSOPHIES OF ADVAITA-VEDANTA	DR. VINOD MANI DIWAKAR	2020	1000
978-93-85754-91-3	PHILOSOPHY OF INDIAN CULTURE, VOL. 3	DR. VINOD MANI DIWAKAR	2020	1150
978-93-85754-97-5	RAJPUT LINEAGE	PROF. S.P. SINGH	2020	800
978-93-85754-82-1	SACRED RIVERS OF INDIA FOREWORD BY RAJENDRA SINGH	DR. AMIT RAI JAIN	2020	3500
978-93-85754-86-9	TREATISE FROM A DEATHBED	VEERENDRA MISHRA	2020	1150
978-93-85754-77-7	ANCIENT ARCHITECTURE OF INDIAN TEMPLES FOREWORD BY PROF. SUSMITA PANDE	DR. AMIT RAI JAIN	2019	1500
978-93-85754-52-4	BEHAVIOUR THERAPY FOR STUDENTS	DR. SANJEEV ARORA	2019	1100
978-93-85754-64-7	CAVE TEMPLES OF INDIA FOREWORD BY DR. BALMUKUND PANDEY	DR. K.K. SHARMA & DR. AMIT RAI JAIN	2019	850
978-93-85754-75-3	FAMOUS FABLES OF INDIAN ARMY FOREWORD BY GENERAL V.K. SINGH	DR. AMIT RAI JAIN	2019	750
978-93-85754-57-9	FUNDAMENTALS OF ROBOTICS	UMESH SINGH	2019	1500
978-93-85754-74-6	HINDUISM & ENVIRONMENT FOREWORD BY PROF. AWADHESH KUMAR SHARMA	PROF. ARVIND KUMAR	2019	1100
978-93-85754-50-0	HUMAN PROBLEMS & ART OF LIVING	MEENA	2019	1100
978-93-85754-58-6	MOLECULAR ELECTRONIC & NANO COMPUTER IN ARTIFICIAL INTELLIGENCE	VINEET SINGH	2019	1350
978-93-85754-80-7	PHILOSOPHY OF INDIAN CULTURE, VOL. 1	DR. VINOD MANI DIWAKAR	2019	1200
978-93-85754-87-6	PHILOSOPHY OF INDIAN CULTURE, VOL. 2	DR. VINOD MANI DIWAKAR	2019	1200
978-93-85754-59-3	ROBOTICS TECHNOLOGY	UMESH SINGH	2019	1400
978-93-85754-53-1	SOCIAL WORK COUNSELING AMONG YOUTHS	DR. ARIMARDAN SINGH	2019	1350
978-93-85754-54-8	SPECIAL EDUCATION FOR SPECIAL CHILDREN	NIRUPAMA ARORA	2019	1200
978-93-85754-55-5	SUCCESSFUL INTERVIEWS MANAGEMENT	DR. SANDEEP SHARMA	2019	1200
978-93-85754-63-0	YOGIC PRACTICES IN JAINISM FOREWORD BY SHRIPAD NAIK	DR. AMIT RAI JAIN	2019	1100
978-93-85754-56-2	YOUTH DEVELOPMENT IN DIGITAL AGE	DISHA SENGUPTA	2019	1250
978-93-85754-51-7	YOUTH, MEDIA & CULTURE	DR. SONIA ARORA	2019	1200
978-93-85754-37-1	HARAPPAN CIVILIZATION FOREWORD BY PROF. B.R. MANI	DR. AMIT RAI JAIN & DR. ANCHAL JAIN	2018	1000
978-93-85754-31-9	YOGA : THE HOLISTIC SYSTEM OF HEALING FOREWORD BY SHRIPAD NAIK	DR. AMIT RAI JAIN	2018	3000
978-93-83982-33-2	FEELING VERSUS EMOTION : TANTRIC LOVE	RICHARDSON & RICHARDSON	2017	650

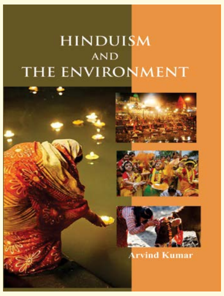

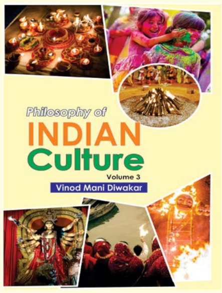

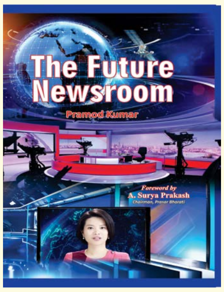

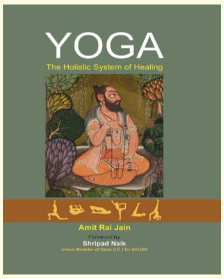

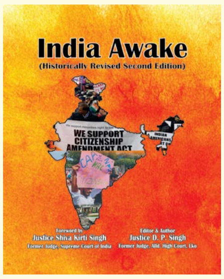

भारतं लोकतंत्रस्य जननी

INDIA

The Mother of Democracy

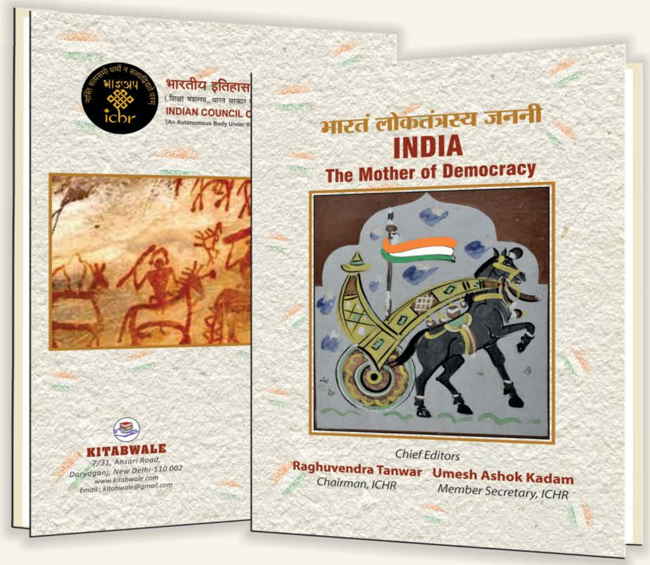

Chief Editors

Raghuvendra Tanwar
Chairman, ICHR

Umesh Ashok Kadam
Member Secretary, ICHR

HARDBACK :
ISBN : 978-93-95472-03-6
Price : ₹ 5000.00

India had a history of republics (गणराज्य) that existed before and after Buddha. These were located in contemporary North Bihar, eastern Uttar Pradesh (U.P.), Balochistan, Sindh, Punjab and in many other parts of ancient India. One such republics was Lichchhavi (लिच्छवी) which existed along with Sakya, Videha, Malla, Malavas (Malloi in Greek), Sivis (Siboi in Greek) and other republics. While Lichchhavi, Sakya and Malla existed in Eastern India (contemporary Varanasi and Gorakhpur regions of eastern U.P and Darbhanga and Muzzaffarpur regions of North Bihar) Malavas and Sivis (as referred in Jataka, in Patanjali's Mahabhasya, it is referred as Saibyas mahajanpadas) existed in North West India (now in Pakistan and Afghanistan)". Lichchhavi was a part of Vajjika territory, one of the 16 mahajanapada which existed around the contemporary village of Basarh (बसाढ़) in Vaishali districts. It's remnants were excavated in the 20th century, first time during 1903-04, then in 1913-14, in 1950 and last time in 1958-599.

The references of Lichchhavi are in Pali, Tibetan, Jain, Greek, Nepalese, Chinese and Sanskrit texts. The inscriptions on stone pillars, coins and copper plate are the other available sources.

The archaeological excavations at the village Basarh (बसाढ़) conclusively prove its existence in ancient India. It was, in fact, in far developed form than even contemporary Indian democracy. Greek texts, referring to Alexander's invasion and his defeat in India often mention about different Indian republics of the time with whom residents of Lichchhavi had good relations. Indian texts, both in Pali and Sanskrit, also refer about the republics of North West now in Afghanistan and Pakistan.

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद
(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के आधीन एक स्वायत्तशासी संस्था)
INDIAN COUNCIL OF HISTORICAL RESEARCH
(An Autonomous Body Under the Ministry of Education, Government of India)

KITABWALE
7/31, Ansari Road,
Daryaganj, New Delhi-110 002
www.kitabwale.com
Email : kitabwale@gmail.com